मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 10 अक्तूबर 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

पब्लिकॉन 2012	2
श्री ए. सेतुमाधवन नेशनल बुक ट्रस्ट के नए अध्यक्ष	3
बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	3
9वें विश्व हिंदी सम्मेलन, जोहान्सबर्ग में एनबीटी की पुस्तक प्रदर्शनी	4
ट्रस्ट-सभागार में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन	5
बांग्ला पुस्तक लोकार्पण समारोह	5
पुस्तक समीक्षा	6
नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय पर कुछ पुस्तकें	7
चिट्ठीघर	8
नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित गांधी विषयक कुछ पुस्तकें	8

नवीनतम प्रकाशन

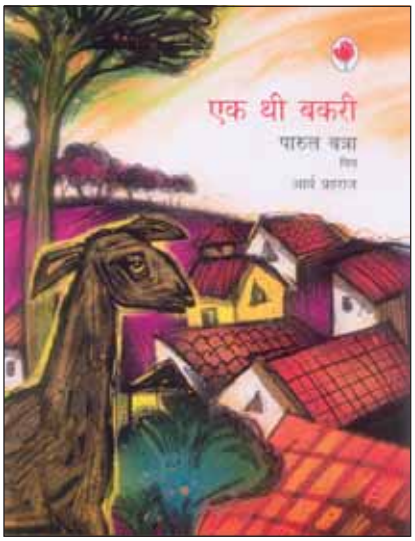

एक थी बकरी

पृ. 16 ₹ 25

के.के.एम. कॉलेज, पाकुड़, झारखंड में साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन

पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर, बाएँ से, सुधीर हेम्ब्रम, शिशिर कुमार मिश्र, टी.पी. भगत, अशोक प्रियदर्शी, चंद्र शेखर झा, बलदेव सिंह बद्दन तथा बालेश्वर साहनी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से 6 अक्तूबर, 2012 को के.के. एम कॉलेज, पाकुड़ में कॉलेज और 'मानवी' संस्था के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. चंद्र शेखर झा ने की। जिला शिक्षा पदाधिकारी श्री बालेश्वर साहनी मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। कार्यक्रम के प्रारंभ में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित छह नवीनतम हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। पुस्तकें थीं : *त्रिपुरा की जनजातीय लोककथाएँ, बिरसा की कहानी, उड़ान, नीम की बेटी, पढ़ना है* और *लोरियाँ*।

इस अवसर पर 'जनजातीय समाज में पठन-अभिरुचि का विकास कैसे हो' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ता थे : डॉ. अशोक प्रियदर्शी, श्री नलिनी कांत और डॉ. कृपाशंकर अवस्थी।

डॉ. प्रियदर्शी ने अपने संबोधन में कहा, "जनजातीय समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए सामूहिक प्रयास की जरूरत है। जनजातीय समाज में पठन-पाठन में अभिरुचि के विकास को लेकर अध्यापन का माध्यम क्षेत्रीय भाषा सुनिश्चित करनी होगी। पाठ्यक्रम का निर्माण बच्चों की भाषा के अनुरूप करने व अध्ययन की शैली भी अनुरूप करने की जरूरत है।" उन्होंने कहा कि पठन-पाठन के दौरान जनजातीय बच्चों को कक्षा में आकर्षक तरीके से शिक्षकों को पढ़ाने की जरूरत है। पठन-पाठन में उनकी भाषा का इस्तेमाल भी करना होगा तभी जनजातीय समाज में पठन-पाठन में अभिरुचि का विकास होगा।

डॉ. कृपाशंकर अवस्थी ने कहा कि आज के इंटरनेट और टीवी युग में पठन अभिरुचि घट जाना आश्चर्य की बात नहीं है। आज पाठ्यक्रम में ऐसी बातों पर ज्यादा जोर है जो हमारी पूरी संस्कृति, आदर्श

कवि गोष्ठी के दो जनजातीय कवि : बाबूधन मरांडी तथा मनोज हौसदा

और परंपराओं को खारिज करती है। इससे अभिरुचि के विकास में और बाधा होती है। भाषाओं की अड़चन भी जनजातीय समाज के बच्चों को पढ़ने की अभिरुचि से दूर करती है। डॉ. अवस्थी ने कहा कि अधिकांश शिक्षक उनकी भाषा से अनभिज्ञ हैं। जनजातीय बच्चों के लिए कोई पत्रिका या समाचार पत्र नहीं है। उनकी अभिरुचि जगे भी तो कैसे?

इस कार्यक्रम की सहयोगी संस्था 'मानवी' के श्री नलिनी कांत के अनुसार झारखंड राज्य में 34 जनजातीय समूह बसते हैं। भले इन जनजातीय समूहों की भाषा की लिपि हो या नहीं, परंतु इनकी परंपराएँ बहुत ही संपन्न हैं, जो इनकी लोककथाओं, गीतों आदि में परिलक्षित हैं। उन्होंने कहा कि जब तक कक्षा पाँच तक मातृभाषा में बच्चों को शिक्षा नहीं दी जाएगी, तब तक छोटे-छोटे जनजातीय समूहों की भाषाओं को बचाना संभव नहीं है। वैश्वीकरण के इस दौर में इन पर दिनोंदिन संकट बढ़ता जा रहा है।

संगोष्ठी में डॉ. युगल झा, डॉ. टी.पी. भगत, डॉ. शिशिर सुमन मिश्रा, महबूब आलम और रामदरश चौधरी ने भी विचार प्रकट किए। डॉ. टी.पी. भगत ने कहा कि पठन-पाठन अभिरुचि पैदा करने में लड़कियों एवं महिलाओं की बड़ी भूमिका है। अतः उन्हें प्रेरित कर नेतृत्व देना होगा। डॉ. युगल झा ने कहा कि बच्चों की शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा हो। अगर ऐसा होता है तो चाहे वह कितना भी बंद समाज क्यों न हो, उसकी व्यापकता का आधार व्यापक होगा।

इस अवसर पर ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक, डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने कहा कि गुणात्मक शिक्षा का विकास तभी संभव है जब लोगों में पढ़ने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हो; इसके लिए लोगों में जिज्ञासा जगानी चाहिए। डॉ. 'बद्दन' ने नेशनल बुक ट्रस्ट के कार्यक्रमों के बारे में विस्तार सहित जानकारी दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री बालेश्वर साहनी ने कहा कि शिक्षा विकास की रीढ़ है। शिक्षा के बिना विकास संभव नहीं है। इसके लिए भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है।

संगोष्ठी के बाद काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस काव्य गोष्ठी में श्री संतोष कुमार, श्री राम बरुण चौधरी, श्री युगल झा, श्री सुदीप कुमार त्रिवेदी, श्री अमरेंद्र सुमन, श्री शिबू टुडू, सुश्री मौसमी बनर्जी, डॉ. डी. मांझी, सुश्री निर्मला पुतुल, श्री टी.पी. भगत, डॉ. शिशिर सुमन मिश्र, डॉ. कृपाशंकर अवस्थी, श्री अनूप कुमार वाजपेयी, श्री नवीन चंद्र ठाकुर, श्री मनोज हौसदा, श्री बाबूधन मरांडी, श्री डब्ल्यू अब्दाली, फरहत निगार खानम, मोहम्मद अब्बास अली, सुश्री सुशीला हंसदा आदि ने हिंदी, संथाली और उर्दू में कविता पाठ किया।

कुमार कालिदास मेमोरियल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. चंद्र शेखर झा ने श्रोताओं का स्वागत करते हुए एन.बी.टी. को धन्यवाद दिया कि उसने इस जनजातीय क्षेत्र में साहित्यिक समागम आयोजित करके एक पुण्य का कार्य किया। उन्होंने अनुरोध किया कि ट्रस्ट को आने वाले समय में कॉलेज में ऐसे और भी कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, क्योंकि इस कॉलेज में जनजातीय समाज के विद्यार्थियों को मिलाकर करीब चार हजार छात्र हैं। उन्होंने कॉलेज की ओर से हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। डॉ. सुधीर हेम्ब्रम और श्री नलिनी कांत ने उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद किया।

'मानवी' के नलिनी कांत संगोष्ठी में संबोधन करते हुए

पब्लिकॉन 2012

प्रकाशन पर दूसरा पब्लिकॉन सम्मेलन 3-4 सितंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली स्थित फिक्की सभागार में आयोजित हुआ। प्रकाशन उद्योग की आवश्यकताओं एवं चिंताओं को लेकर फिक्की गत वर्ष से पब्लिकॉन सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। यह इस उद्योग के विशेषज्ञों के बीच उद्योग से संबंधित बहस, विमर्श, चर्चा, नीति और व्यापारिक मुद्दे, नेटवर्क तथा व्यापारिक संभावनाओं की खोज आदि के लिए एक मंच उपलब्ध कराता है। इस वर्ष सम्मेलन का थीम था–डिजिटल प्रकाशन। इस सम्मेलन में जिन मुद्दों पर चर्चाएँ हुईं उनमें प्रकाशन उद्योग और संशोधित कॉपीराइट बिल, डिजिटल युग में कंटेंट की मोनिटरिंग तथा वितरण का प्रबंधन आदि जैसे भी विषय शामिल थे।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए लेखिका तथा सदस्य सचिव, भारतीय साहित्य विदेश, सुश्री नमिता गोखले ने कहा कि "मनुष्य का मस्तिष्क एक रैखिक मॉडल से 360 डिग्री तक निरंतर बदलता रहता है। तो भी, विचार की जो शुद्धता है वह सदैव अपरिवर्तित रहती है।"

इस अवसर पर अपने विशेष संबोधन में ट्रस्ट की संयुक्त निदेशक श्रीमती फरीदा एम. नाईक ने कहा, "प्रकाशन के क्षेत्र में तकनीकी विकास एक तरफ तो विकास के लिए अवसर उपलब्ध करा रहे हैं और दूसरी तरफ यह रोज-रोज नई चुनौतियाँ भी दे रही है। पब्लिकॉन जैसे सम्मेलन ऐसे मुद्दों को विमर्श के लिए सामने लाते हैं, जो प्रकाशन उद्योग के भविष्य के लिए सुसंगत हैं।"

अपने संबोधन में फिक्की के महानिदेशक डॉ. अरविंद प्रसाद ने कहा कि अब तक हमारा फोकस अँग्रेजी प्रकाशन पर था पर अब हम धीरे-धीरे अन्य भाषाओं में भी इसका विस्तार करने जा रहे हैं।

इससे पूर्व, फिक्की प्रकाशन समिति की अध्यक्ष तथा 'जुबान' की निदेशक सुश्री उर्वशी बुटालिया ने भागीदारों का स्वागत किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया पब्लिकॉन 2012 का कार्यक्रम भागीदार था।

श्री ए. सेतुमाधवन नेशनल बुक ट्रस्ट के नए अध्यक्ष

श्री ए. सेतुमाधवन ने 12 सितंबर, 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नए अध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने प्रो. विपिन चंद्र का स्थान लिया है जो प्रख्यात इतिहासकार एवं नेशनल रिसर्च प्रोफेसर हैं।

सेतु के नाम से लोकप्रिय श्री ए. सेतुमाधवन (जन्म 1942) आधुनिक मलयालम कथा साहित्य के अग्रणियों में से एक हैं जिन्होंने सन् साठ और सत्तर के दशकों के आरंभिक वर्षों के दौरान अपनी लेखनी के द्वारा साहित्यिक संवेदनशीलता में एक आमूलचूल परिवर्तन लाया। अपने लगभग साढ़े चार दशकों की लंबी साहित्यिक यात्रा में सेतु ने 17 से अधिक उपन्यास तथा 20 कहानी संग्रह लिखे। उनके अनेक उपन्यासों एवं कहानियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी महत्वपूर्ण कृतियों में शामिल हैं : *पांडवापुरम, विलायत्तम, नियोगम, अतायालांगल, मरुपिरवी* (उपन्यास); *इडु, चिलकालंगलील चिला गायत्रीमार, अद्यक्षरंगल* (कहानी संग्रह) तथा *सनीदासा, यात्राकिदायिल* (निबंध)। सेतु अनेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं। इनमें प्रमुख हैं : साहित्य अकादेमी सम्मान, केरल साहित्य अकादेमी सम्मान तथा वायलर सम्मान। उनकी तीन कृतियों पर फिल्म का निर्माण भी हुआ है जिसमें *पांडवापुरम* की काफी ख्याति है। इस पर बांग्ला भाषा में भी *निराकार छाया* नाम से फिल्म बनी है।

विज्ञान विषय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत सेतु ने बहुत ही कम आयु में अपने व्यावसायिक करिअर की शुरुआत की। इस क्रम में वे देश के अनेक भागों में गए। यह समय उनके जीवन का एक प्रयोगात्मक समय था जिसने उनकी साहित्यिक संवेदनशीलता को आकार दिया और जो उनकी अनेक महत्वपूर्ण कृतियों में प्रतिबिंबित भी हुआ। उन्होंने बैंकिंग सेवा में स्टेट बैंक समूह में प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में अपनी नौकरी की शुरुआत की। इस समूह में अनेक महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करने के उपरांत उन्होंने कॉरपोरेशन बैंक में जी.एम. (जेनरल मैनेजर) के रूप में पद संभाला। तदंतर, देश के निजी क्षेत्र के एक बड़े बैंक, साउथ इंडियन बैंक के अध्यक्ष एवं सीईओ बने। बैंकिंग सेवा तथा साहित्यिक यात्राओं के क्रम में उन्हें विदेशों में भी पर्याप्त भ्रमण का अवसर मिला, जहाँ अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में उन्होंने भागीदारी की। वे स्टेट बैंक ऑफ ट्रावणकोर में तीन वर्षों की अवधि के लिए बोर्ड में भी रहे। वर्तमान में वे साहित्य अकादेमी के मलयालम सलाहकार समिति के बोर्ड में शामिल हैं।

प्रो. विपिन चंद्र से अध्यक्ष का कार्यभार लेने के उपरांत ट्रस्ट-अधिकारियों से संवाद के क्रम में श्री सेतुमाधवन ने अपने व्यावसायिक, साथ-ही-साथ लेखन करिअर के बारे में बातचीत की। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि अगर किसी संस्था को आगे बढ़ना है तो उसे समय के अनुकूल बदलना चाहिए।

अधिकारियों से नए अध्यक्ष का परिचय कराते हुए ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने कहा कि नए अध्यक्ष के रूप में हमें एक योग्य प्रशासक और साथ ही एक संवेदनशील लेखक मिला है जो ट्रस्ट के लिए गर्व की बात है और दुर्लभ संयोग भी।

उल्लेखनीय है कि आठ लंबे वर्षों तक ट्रस्ट की सेवा करने के बाद प्रो. विपिन चंद्र ट्रस्ट से सेवानिवृत्त हुए। ट्रस्ट में उनके लंबे सेवाकाल में ट्रस्ट के प्रकाशन परिदृश्य में व्यापक परिवर्तन आया और ट्रस्ट प्रकाशन की दुनिया में एक नए मुकाम पर पहुँचा। उनके रहते हुए ट्रस्ट को अनेक नए लेखक मिले, साथ ही एक वृहत्तर पाठक समुदाय भी। प्रो. चंद्र ने नए अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन का ट्रस्ट में स्वागत किया।

बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

19वाँ बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 29 अगस्त से 3 सितंबर, 2012 के दौरान चाइना इंटरनेशनल एक्जिबिशन सेंटर, बीजिंग में आयोजित हुआ। चीन के स्टेट काउंसिलर श्री लिउ यान्डॉन्ग तथा दक्षिण कोरिया के संस्कृति, खेल एवं पर्यटन मंत्री श्री चोई क्वांग-सिक उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि थे।

विगत कुछ वर्षों से बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला विश्व के महत्वपूर्ण पुस्तक मेलों में गिना जाने लगा है। चीन का प्रकाशन उद्योग वर्तमान समय में एक बढ़ता हुआ उद्योग बना हुआ है और लगभग 7.7 अरब पुस्तकों के उत्पादन के साथ विश्व में सर्वाधिक पुस्तक उत्पादन वाले देशों में यह शामिल है।

एक अधिक उदार शासन के आज के दौर में फलते-फूलते चीन के एक औसत पाठक को आज विधा और विषय-वस्तु, दोनों ही दृष्टियों से पढ़ने का कहीं अधिक विकल्प प्राप्त है। इसे पुस्तक मेले में साफ-साथ देखा जा सकता था।

बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के आयोजन में भागीदार समितियों में शामिल थे—एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ प्रेस तथा पब्लिकेशन ऑफ द पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना, स्टेट काउंसिल इन्फॉर्मेशन ऑफिस ऑफ पीआरसी, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन तथा चाइना नेशनल पब्लिकेशंस इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन। इस पुस्तक मेले में पुस्तक उद्योग से संबंधित 75 से अधिक देशों के 2000 से अधिक प्रकाशक तथा भागीदार शामिल थे। दक्षिण कोरिया पुस्तक मेले का सम्मानित अतिथि देश था, जो चीन के साथ राजनयिक संबंधों की 20वीं जयंती मना रहा है।

बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के इस संस्करण में प्रकाशन उद्योग में डिजिटाइजेशन तथा तकनीकी में उभार मुख्य विषय था। इस विषय के इर्द-गिर्द अनेक विमर्श एवं संगोष्ठियों के आयोजन हुए।

पुस्तक मेले में भारतीय भागीदारी में एनबीटी समेत एफ्रो-एशियन बुक काउंसिल तथा यूबीएस पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स शामिल थे। एनबीटी द्वारा देश भर के 20 प्रकाशकों की 150 से अधिक पुस्तकों की सामूहिक प्रदर्शनी लगाई गई थी। ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने इस पुस्तक मेले में एनबीटी का प्रतिनिधित्व किया।

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन, जोहान्सबर्ग में एनबीटी की पुस्तक प्रदर्शनी

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

दिनांक 22 से 24 सितंबर, 2012 की अवधि में दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में एनबीटी ने अपनी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई।

22 सितंबर को जोहान्सबर्ग के गाँधीग्राम (सैंडटन कन्वेंशन सेंटर) स्थित नेल्सन मंडेला सभागार में 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भारत की विदेश राज्यमंत्री एवं समारोह की अध्यक्ष श्रीमती प्रनीत कौर ने कहा, ''दक्षिण अफ्रीका विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए एक तीर्थयात्रा की तरह है।'' श्रीमती कौर ने कहा कि हिंदी का संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनने का अधिकार बनता है।

उद्घाटन सत्र में मंत्री महोदया ने ट्रस्ट से सद्यःप्रकाशित, शिव कुमार मिश्र लिखित पुस्तक 'निष्काम कर्मयोगी : पंडित सुंदर लाल' का लोकार्पण भी किया।

दुनिया के अनेक देशों से पधारे हिंदीप्रेमियों एवं हिंदीसेवियों से भरे सभागार में आयोजित समारोह में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय उच्चायुक्त श्री वीरेंद्र गुप्ता ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि हिंदी भाषा के बढ़ते कदमों का दुनिया में स्वागत हो रहा है। उन्होंने कहा कि युवाओं को हिंदी से जोड़ना हम सबकी सबसे पहली जिम्मेवारी है। विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री एम. गणपति ने कहा कि हम अपने स्वयं के काम-काज और जीवन में हिंदी को महत्व दें। पूर्व सांसद एवं महात्मा गाँधी की प्रपौत्री श्रीमती इला गाँधी ने कहा कि हिंदीभाषियों को उपनिवेश काल की उस मानसिकता को त्यागना होगा जिसके तहत एक भाषा उच्च तथा दूसरी भाषा हीन मानी जाती है। विश्व हिंदी संचालन समिति के अध्यक्ष तथा सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी ने कहा कि चीनी के बाद हिंदी दुनिया की सर्वाधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है। उन्होंने कहा कि हम अपनी भाषा के प्रति वही सम्मान भाव रखें, जो दूसरे देशों के लोग अपनी-अपनी भाषा के लिए रखते हैं। मुख्य अतिथि दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रदीप गोवर्धन ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ लगातार विकसित हो रही हैं।

दक्षिण अफ्रीका स्थित हिंदी शिक्षा संघ की अध्यक्ष सुश्री मालती रामबली ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर आदान-प्रदान से हिंदी के सहयोग और विकास के अवसर बढ़ेंगे। दक्षिण अफ्रीका के उप विदेशमंत्री माल्यिस फ्रांस्मन ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में बहुत-से हिंदीभाषी अरसे से रहते हैं। इस अवसर पर मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री का भी संबोधन हुआ।

समारोह के अंतिम दिन, समापन सत्र के बाद कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिनमें कई कवियों ने भाग लिया।

श्रीमती प्रनीत कौर उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए

सम्मेलन के दौरान समारोह स्थल पर नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा लगाई गई ट्रस्ट के प्रकाशनों की प्रदर्शनी को हिंदीप्रेमियों ने बेहद सराहा। आगंतुक पुस्तिका पर हिंदीप्रेमियों एवं लेखकों की टिप्पणियाँ उत्साहवर्धक थीं। शेरजंग गर्ग ने लिखा–प्रदर्शनी प्रेरक है। सांसद डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह ने लिखा–एनबीटी पुस्तक संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जोहान्सबर्ग में रहने वाली एक भारतवंशी श्रीमती झरना दीक्षित ने लिखा–पुस्तकों का बहुत अच्छा संकलन है। प्रो. वशिनी शर्मा, आगरा ने प्रदर्शनी को 'सराहनीय' बताया। मिजोरम विश्वविद्यालय की सुश्री वंदना भारती ने प्रदर्शनी को 'उम्दा किस्म' का लिखा। डॉ. विवेक गौतम ने लिखा–श्रेष्ठ और सुंदर। छत्तीसगढ़ के सेवाशंकर अग्रवाल की टिप्पणी थी–इस पुस्तक प्रदर्शनी के द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा हिंदी के विश्व स्तर पर प्रसार हेतु जो प्रयास किया जा रहा है उसके लिए बधाई। सोमेश 'सोम' ने लिखा–उत्तम पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाकर ट्रस्ट ने सराहनीय कार्य किया है।

उल्लेखनीय है कि 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने दक्षिण अफ्रीका स्थित हिंदी सेवा संघ एवं कुछ अन्य भागीदारों के सहयोग से किया था। सम्मेलन के दौरान हिंदी के प्राचीन एवं आधुनिक पहलुओं से संबंधित विभिन्न परंपरागत एवं समसामयिक विषयों पर चर्चाएँ एवं संगोष्ठियों के आयोजन हुए। सम्मेलन का विषय 'भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ' रखा गया था। सम्मेलन के दौरान नौ शैक्षिक सत्रों के आयोजन हुए। दक्षिण अफ्रीका के साथ महात्मा गाँधी के संबंधों की गहन स्मृतियों का जुड़ाव तथा अफ्रीकी महाद्वीप के साथ भारत के ऐतिहासिक एवं घनिष्ठ संबंधों के आलोक में दक्षिण अफ्रीका में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सामयिक और समीचीन था। विदित हो कि पहला विश्व हिंदी सम्मेलन वर्धा, भारत में 1975 में हुआ था। अगला विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में आयोजित करने की घोषणा की गई है।

जोहान्सबर्ग विश्व हिंदी सम्मेलन में ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व हिंदी संपादकद्वय श्रीमती उमा बंसल एवं श्री दीपक कुमार गुप्ता ने किया।

बाएँ, एनबीटी का स्टॉल; मध्य में, स्टॉल पर मंत्री महोदया अवलोकन करते हुए; दाएँ, उद्घाटन सत्र में भीड़ का एक दृश्य

ट्रस्ट-सभागार में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

एक प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन

पिछले दिनों ट्रस्ट सभागार में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पहले दिन (24 सितंबर) हिंदी काव्य-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश के प्रख्यात तीन साहित्यकारों ने ट्रस्टकर्मियों की रचनाएँ सुनीं और अपनी भी कविताएँ–गीत रचनाएँ सुनाकर उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इनमें सर्वश्री डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. बालस्वरूप राही व डॉ. धनंजय सिंह थे।

दूसरे दिन (25 सितंबर) निबंध प्रतियोगिता का चरण था जिसमें प्रतिभागियों को दो विषय दिए गए, जिनमें 'ई-पुस्तक के मायने' और 'पुस्तक मेलों की सार्थकता' विषय थे। ट्रस्टकर्मियों ने लेखन की इस प्रतियोगिता में बड़े उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर निर्णायक डॉ. प्रेम जनमेजय (एसोसिएट प्रोफेसर, वोकेशनल कॉलेज, दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) थे। अपने आरंभिक वक्तव्य में डॉ. प्रेम जनमेजय ने प्रतिभागियों को निबंध की बारीकियों से अवगत कराया। तीसरे और अंतिम दिन (26 सितंबर) की प्रतियोगिता का विषय आलेखन प्रतियोगिता (नोटिंग एंड ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता) था। इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे विशेषज्ञ श्री सुभाष चंदर। इस प्रतियोगिता में भी ट्रस्ट के हिंदी व अहिंदीभाषी कर्मचारियों व अधिकारियों ने उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन व निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

इन प्रतिभागियों को, जो प्रतियोगिताओं में शामिल थे, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन ने पुरस्कृत किया। प्रतिभागियों में थे–निबंध प्रतियोगिता : प्रथम पुरस्कार–श्रीमती कंचन वांचू शर्मा (अहिंदी वर्ग), हिंदी वर्ग में प्रथम–सुश्री पूनम मधुकर, द्वितीय–सुश्री अंजुरानी, तृतीय–श्री ओमबीर व सांत्वना पुरस्कार–श्री संदीप भाटिया। कविता के लिए, अहिंदी वर्ग में पहला पुरस्कार–श्री ब्रतीन डे (संपादक बांग्ला), हिंदी वर्ग में प्रथम–श्रीमती प्रभा कपूर, द्वितीय–श्री सैयद हैदर रिज़वी, तृतीय–श्री सुरेश कुमार व सांत्वना पुरस्कार–श्री श्यामलाल कोरी व श्री करुण कुमार। आलेखन प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार अहिंदी वर्ग में श्री भाग्येंद्र बहादुरभाई पटेल, दूसरा पुरस्कार–श्रीमती बबीता विश्वास व हिंदी वर्ग में प्रथम पुरस्कार–श्रीमती सविता कुमारी, द्वितीय पुरस्कार–श्री राजकुमार, सांत्वना पुरस्कार–श्री सतीश कुमार व श्री ओमबीर को मिला।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन ने प्रतियोगियों को अपनी शुभकामनाएँ दीं और उन्हें और बेहतर लिखने के लिए मार्गदर्शन भी किया। इस अवसर पर निर्णायक श्री सुभाष चंदर ने मंत्रालय के नियमों से परिचय कराते हुए सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

इस तीन दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रमों का संचालन ट्रस्ट में हिंदी संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने किया।

बांग्ला पुस्तक लोकार्पण समारोह

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा बांग्ला में प्रकाशित *पुनश्च रबींद्रकृति* पुस्तक का लोकार्पण 7 अगस्त, 2012 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, कोलकाता के सभागार में किया गया। प्रख्यात इतिहासकार प्रो. सब्यसाची भट्टाचार्य एवं ट्रस्ट के बांग्ला संपादक ब्रतीन डे के द्वारा संयुक्त रूप से संपादित टैगोर स्मृति पर केंद्रित इस पुस्तक पर विद्वानों द्वारा विमर्श भी किया गया। पुस्तक का लोकार्पण प्रख्यात विद्वान एवं अँग्रेजी के प्रोफेसर तथा रबींद्रभारती यूनिवर्सिटी के भूतपूर्व कुलपति श्री चिन्मय गुहा ने किया। उन्होंने टैगोर पर ऐसी स्मृतिपरक पुस्तक प्रकाशित करने के लिए एनबीटी की प्रशंसा की।

अपने परिचयात्मक संबोधन में प्रो. सब्यसाची भट्टाचार्य ने पुस्तक तथा लेखकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। विमर्श-चर्चा में जो विद्वान शामिल थे, वे थे–सौरीन भट्टाचार्य, गोपीकानाथ रॉयचौधुरी, सोमेंद्रनाथ बंद्योपाध्याय, अनाथबंधु चटर्जी, सुप्रियो टैगोर, शेखर समाद्दर, सुतापा भट्टाचार्य तथा सुदेष्णा चक्रवर्ती।

इससे पूर्व, ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने उपस्थित अतिथियों एवं आगंतुकों का स्वागत किया।

एक अन्य पुस्तक लोकार्पण एवं विमर्श कार्यक्रम यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता के शताब्दी पुराने दरभंगा हॉल में 8 अगस्त, 2012 को हुआ। ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का सहयोगी था यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता का सेंटर फॉर स्टडीज इन बुक पब्लिशिंग।

इस अवसर पर एनबीटी द्वारा प्रकाशित दो बांग्ला पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। ये पुस्तकें थीं–*माइकल मधुसूदन दत्त : जीवन ओ साहित्य* (सुरेश चंद्र मोइत्रा) तथा *रबींद्रनाथेर शिशु साहित्य : पोनरोटि गल्पो* (संक. एवं संपा. : अमरेंद्र चक्रवर्ती)। पुस्तकों का लोकार्पण प्रो. स्वपन मजूमदार एवं प्रो. यूथिका बोस ने किया। प्रो. मजूमदार ने मधुसूदन दत्त पर पुस्तक के लेखक सुरेश चंद्र मोइत्रा के साथ के अपने संस्मरण साझा किए। उन्होंने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि एनबीटी बांग्ला भाषा के लिए अग्रणी लेखकों एवं उनके साहित्य में रुचि दिखा रहा है। प्रो. यूथिका बोस ने कहा, "एनबीटी एक पुस्तक मानस समाज के निर्माण में जी जान से जुटा है, और ट्रस्ट के किफायती मूल्य वाली इन गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों का समाज पर फलदायी प्रभाव पड़ रहा है।"

इस अवसर पर मधुसूदन दत्त एवं टैगोर के जीवन एवं कर्म के विभिन्न आयामों पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। ये थे–प्रो. विश्वनाथ राय, प्रो. असीम चटर्जी, प्रो. गोपा दत्ता भौमिक तथा प्रो. सुदीप बसु।

कार्यक्रम का समन्वय ट्रस्ट में बांग्ला संपादक श्री ब्रतीन डे ने किया।

पुस्तक समीक्षा

स्त्रियाँ : पर्दे से प्रजातंत्र तक (स्त्री विमर्श)
दुष्यंत; पृ. 248 ₹ 400
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
राजस्थान के तीन रजवाड़ों—जोधपुर, जैसलमेर एवं बीकानेर के विशेष संदर्भ में 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक स्त्री अध्ययन को प्रस्तुत करती इस पुस्तक में सामान्य महिलाओं की स्थिति पर भी लेखक ने सायास एवं विशेष तौर पर ध्यान केंद्रित किया है। हिंदी में रचनात्मक शोध को प्रस्तुत करती एक विचारपरक एवं तथ्यात्मक पुस्तक।

औरत की आवाज
नासिरा शर्मा; पृ. 440 ₹ 695
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-51
तीन खंडों में विभक्त इस पुस्तक में लेखिका द्वारा लिये गए साक्षात्कार, लेखिका से लिये गए साक्षात्कार तथा लेखिका के लेख शामिल हैं। साक्षात्कारदाता विभिन्न देशों की हैं जो स्त्री प्रश्न पर अपनी बेबाक राय रखती हैं। इसी तरह, कुछ महत्वपूर्ण पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब लेखिका द्वारा दिया गया है। यह हिंदी की दुनिया में एक नया प्रयोग है और अहम भी।

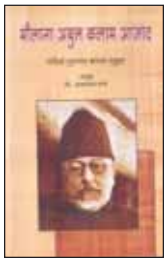

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (जीवनी)
मलिक मुहम्मद कमाल यूसुफ़
पृ. 192 ₹ 250
सर्जना, शिवबाड़ी रोड, बीकानेर-334003
पं. नेहरू ने मौलाना आज़ाद को 'जाज्वल्यमान व्यक्तित्व' कहा था। ऐसे ही महान व्यक्तित्व, भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जीवनी है यह। इस पुस्तक को पढ़कर मौलाना आज़ाद के अनेक अनछुए पहलुओं की जानकारी मिलती है। लेखक मौलाना साहब के निजी एवं सार्वजनिक जीवन के अनेक आयामों को सहज रूप में पाठकों के सामने रखने में सफल रहे हैं।

सन्नाटा बुनते हुए (काव्य संग्रह)
केवल गोस्वामी
पृ. 106 ₹ 175
नेहा प्रकाशन, 295, बैंक एन्क्लेव, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92
स्वयं ही संघर्षों में जीने का आदी कवि जब कविता लेखन करता है तो कविताओं में संघर्ष, जिजीविषा, दर्द और उच्छ्वास यत्र-तत्र एक अनिवार्य उपादान के तौर पर अवश्यंभावी रूप में दिखते हैं। यहाँ भी यही हुआ है। लेकिन लेखक का 'स्व' यहाँ 'पर' के रूप में आया है, व्यष्टि समष्टि के रूप में आया है और यही कवि के लेखन की सफलता है।

समूर्त्त नारी आत्मा : जीवनलता पूर्वे (हायकू)
जसवंत सिंह विरदी
पृ. 112 ₹ 200
समीक्षा प्रकाशन, जे.के. मार्केट, छोटी कल्याणी, मुजफ्फरपुर, बिहार-842001
इस पुस्तक में विरदी के 262 हायकू शामिल हैं। विरदी का साहित्य संसार बेहद विस्तृत रहा है। साहित्य की अनेक विधाओं में इनकी रचनाएँ हुईं। प्रस्तुत हायकू में बहनों के प्रति उनका स्नेह है, साथ ही जीवन-जगत के अनेक अनुभव भी। यह पुस्तक लेखक के जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो सकी।

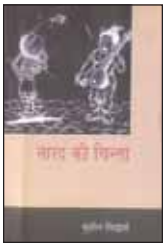

नारद की चिंता (व्यंग्य कृति)
सुशील सिद्धार्थ
पृ. 272 ₹ 395
सामयिक बुक्स, 3320/21, जटवाड़ा, दरियागंज, एस. एन. मार्ग, नई दिल्ली-02
इस व्यंग्य कृति में लेखक ने उन चेहरों, प्रवृत्तियों और शक्तियों को एक्सपोज करने का काम किया है जो आज समाज और सत्ता पर काबिज हैं। उन्होंने सामाजिक संदर्भों को व्यंग्य रूप में किस्सागोई के अंदाज में रेखांकित और विश्लेषित किया है।

भारतीय साहित्य में मुसलमानों का अवदान
जाफ़र रज़ा
पृ. 276 ₹ 375
लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-211001
प्रस्तुत कृति में भारतीय साहित्य में मुसलमानों के योगदान की वृहत चर्चा की गई है। 29 भारतीय भाषाओं की चर्चा करते हुए इनके विकास क्रम तथा साहित्य रचना में मुसलमानों के अवदान को रेखांकित किया गया है। भारतीय साहित्य अनेकता में एकता का एक बेहतरीन उदाहरण है इसे इस कृति को पढ़कर समझा जा सकता है।

रात का पहाड़ (लघुकथा)
हेमंत शेष
पृ. 148 ₹ 200
वाग्देवी प्रकाशन, विनायक शिखर पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास, बीकानेर-334003
लघुकथा के कलेवर में होते हुए भी यह आम लघुकथाओं से कुछ अलग है। इसमें कई जगह भाव है, कई जगह विचार है और कई जगह लेखक की अपनी स्थापना। लेखक मूलतः एक कवि हैं और एक कवि का गल्प के क्षेत्र में प्रवासन गल्प को एक नया गढ़न और रूप प्रदान करता है।

सच और है (ग़ज़ल संग्रह)
विनय मिश्र;
पृ. 118 ₹ 150
मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
जहाँ कविता में कहन समाप्त होता है वहाँ से ग़ज़लें शुरू हो जाती हैं। यहाँ ग़ज़लों के रचनाकार अपनी ग़ज़लों के माध्यम से जहाँ सामाजिक विद्रूपताओं को रेखांकित करते हैं वहीं साम्राज्यवादी अपसंस्कृति का चेहरा दिखाकर हमें सचेत भी करते हैं। समकालीन जीवन की विसंगतियों का ग़ज़लांकन हमें और बेहतर मनुष्य बनने को प्रेरित करती है।

बेटे से बेटी भली (कविता संग्रह)
मोहन शशि
पृ. 588 ₹ 500
अखिल भारतीय महिला परिषद जबलपुर एवं तरुण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'मिलन', जबलपुर
जबलपुर के कवि, पत्रकार मोहन शशि की इस लंबी कविता में गहरी विकलता व बेचैनी है। वे यहाँ संघर्षशील नारी समाज के पक्ष में खड़े हैं। यह कविता एक खेदपूर्ण वकालत भी है बेटियों की।

नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय पर कुछ पुस्तकें

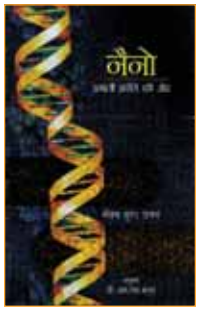

नैनो : अगली क्रांति की ओर

मोहन सुंदर राजन; अनु. : आर.एस. यादव

पृ. 180 ₹ 85.00

हमारे दैनिक जीवन में नैनो तकनीकी भविष्य की नई क्रांति के रूप में उभरकर आ रही है। इलेक्ट्रॉनिक्स, जीव विज्ञान, भौतिक शास्त्र, पदार्थ विज्ञान और अभियांत्रिकी के क्षेत्र में आश्चर्यचकित कर देने वाले अनुप्रयोग हमारे सामने हैं। पुस्तक में इस नई क्रांतिकारी तकनीकी की मूलभूत जानकारी, इसके विकास की पृष्ठभूमि और भारत सहित विश्व के वैज्ञानिकों की अगुआई में चल रहे शोधकार्यों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

आधुनिक निदानात्मक उपचार पद्धतियां

अनिल अग्रवाल; अनु.: प्रवीण शर्मा

पृ. 250 ₹100.00

आधुनिक प्रौद्योगिकी के कारण रोग के निदान और उपचार क्षेत्र में आई क्रांति का विश्लेषण करती एक महत्वपूर्ण पुस्तक।

आयुर्वेद : विभिन्न पहलू

शरदिनी डहाणूकर, उर्मिला थत्ते; अनु. : लक्ष्मीनारायण गर्ग

पृ. 130 ₹ 40.00

आयुर्वेद के रहस्यों को आम पाठकों के समक्ष रखने वाली महत्वपूर्ण पुस्तक।

मानव की कहानी

बिमान बसु; अनु. : शमशेर सिंह

पृ. 80 ₹ 60.00

मानव के विकास की प्रामाणिक वैज्ञानिक जानकारी को संजोए यह पुस्तक उबाऊ न होकर अत्यंत पठनीय बन पड़ी है। विषय को समझने में कहीं कोई कठिनाई नहीं होती।

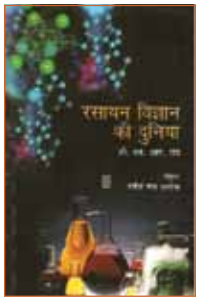

रसायन विज्ञान की दुनिया

सी.एन.आर. राव; अनु. : सतीश चन्द्र सक्सेना

पृ. 250 ₹ 335.00

रसायन विज्ञान की दुनिया से परिचय कराती एक ज्ञानवर्धक पुस्तक।

मनोरोग

मनजीत सिंह भाटिया

पृ. 186 ₹ 80.00

मनोरोग जैसे गूढ़ विषय पर अत्यंत सरल, सहज एवं जानकारीपूर्ण पुस्तक।

औषधीय पौधे

सुधांशु कुमार जैन

पृ. 242 ₹ 130.00

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा लगभग सौ किस्म के औषधीय पौधों के बारे में जानकारी दी गई है। इसमें जड़ी-बूटियाँ, वनस्पति नामकरण, पौधों का संरक्षण तथा लुप्तप्रायः पौधे जैसे विषय शामिल हैं।

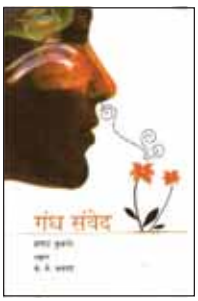

गंध संवेद

शारदा बुलचंद; अनु : के.के. कक्कड़

पृ. 84 ₹ 55.00

गंध संवेदना सभी संवेदनाओं में सबसे अधिक आदिम व रहस्यमय है। प्रस्तुत पुस्तक में संवेदी प्रणाली के कार्य, गंध चिकित्सा, घ्राण स्मृति की भूमिका तथा गंध संवेदना के विकारों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

प्लास्टिक

चिन्तन; अनु. : धर्मेन्द्र कुमार

पृ. 82 ₹ 45.00

यह पुस्तक प्लास्टिक के कारण पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले कुप्रभावों और भविष्य में मानव जाति के लाभ के लिए प्लास्टिक पर हमारी निर्भरता कम करने के प्रयासों के विषय में बताती है।

जल : जीवन का आधार

कृष्ण कुमार मिश्र

पृ. 106 ₹ 35.00

पानी के कारण ही पृथ्वी पर जीवन अस्तित्व में आया। इसी पानी के विभिन्न पक्षों पर वैज्ञानिक जानकारी देती पुस्तक।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/10/2012

चिट्ठीघर

नेशनल बुक ट्रस्ट की नवीनतम पुस्तकों की सूची **संवाद** के लगभग हर अंक में देखता हूँ। इन्हें देखकर लगता है कि पुस्तकों का समृद्ध सागर लहरा रहा है, कौन-सी बूँद पकड़ूँ, कितनी बूँदें संजोऊँ जो मेरे मन और वुद्धि के सागर को लबालब भर दे। पिछले इंदौर पुस्तक मेले से खरीदी पुस्तकें आज भी मेरी बढ़िया मित्र हैं और इन्हें सदा तकिए के साथ रखता हूँ। **संवाद** की जितनी भी सराहना की जाए, थोड़ी है। एक जानकारी चाहिए : पंडित सुंदर लाल पर ट्रस्ट से हाल ही में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। जानना चाहता हूँ क्या पं. सुंदर लाल 'भारत में अँग्रेजी राज्य' नामक पुस्तक के लेखक थे?

वीरेंद्र शर्मा 'कौशिक', मऊरानीपुर, झांसी, उ.प्र.

हाँ, आपकी जानकारी सही है। **–संपा.**

एनबीटी के सारे उपक्रम पुस्तक संस्कृति को जिंदा रखने, पठन-वृत्ति को जाग्रत करने, भारतीय तथा विश्व साहित्य को बहुसंख्य वर्ग तक पहुँचाने वाले हैं। यह **संवाद** से सिद्ध होता है। **संवाद** मिलने पर साहित्य-विश्व की सारांशिका मिलने का आनंद और गर्व दोनों का अनुभव होता है। **इंदिरा किसलय,** नागपुर, महाराष्ट्र

नेबुट्र द्वारा लेह जैसे दूरस्थ क्षेत्र में पुस्तक प्रदर्शनी लगाने तथा पटियाली, कासगंज में पुस्तक मेले लगाने आदि अनेक सूचनाएँ **संवाद** सितंबर अंक से मिली। पुस्तक प्रदर्शनियाँ तथा पुस्तक मेले पुस्तक संबंधी जानकारी बढ़ाने वाले होते हैं। पत्रिका अन्य कई प्रकार से भी ज्ञानवर्धक लगी। **प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा

नवीनतम पुस्तकों तथा ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक मेले/प्रदर्शनियों की जानकारी प्राप्त कर अतीव प्रसन्नता होती है। पुस्तक संबंधित गतिविधियों के आयोजन संबंधी रिपोर्ट का प्रकाशन **संवाद** की विशिष्टता है, जो श्लाघनीय है। **कुलभूषण सोनी,** किराड़ी, दिल्ली-86

संवाद का सितंबर अंक आया। उल्लास-उमंग के संग खुशियाँ अपार लाया। जानकारियों ने नवल झरना बहाया। इसीलिए नया अंक भाया। पढ़ने की संस्कृति का कर रहे हैं आप विकास। मेरी नजर में आपका यह कार्य बनाएगा इक दिन इतिहास। यही है मुझे विश्वास। आप छू लेंगे इक दिन आकाश। **प्रो. शरद नारायण खरे,** मंडला, म.प्र.

नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित गांधी विषयक कुछ पुस्तकें

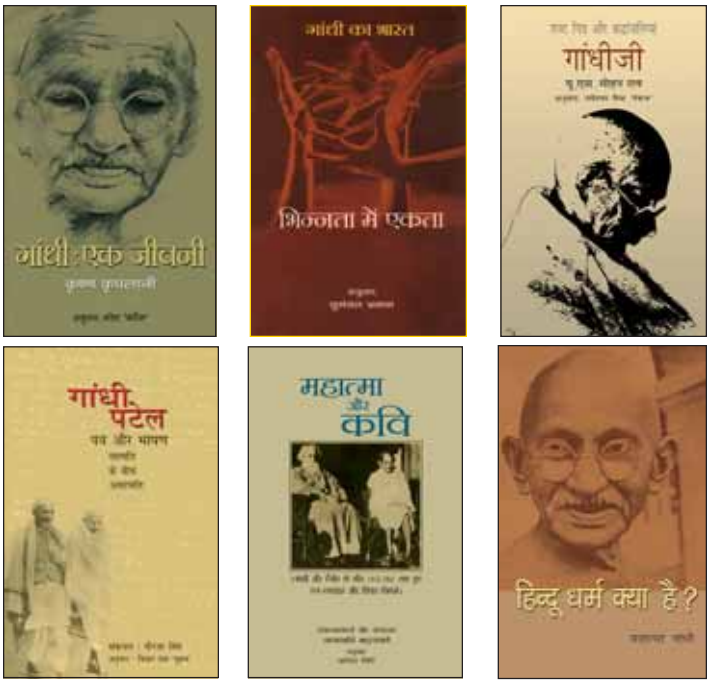

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070